HISLOP COLLEGE, NAGPUR

The story of Hislop College began when a young Scottish missionary set out for India with fire in his belly and dreams in his eyes. Stephen Hislop's humanitarian zeal motivated him to start in 1846, a boy's school at Shukrawara, old Nagpur. The College was established in 1883. From a modest beginning, Hislop College has emerged as one of the finest institutions of higher learning in Central India with over 5000 young boys and girls.

The College is run by the Hislop Education Society under the aegis of the Church of North India Synod. It was the first institution to provide higher education in the Vidarbha region. In 2009, the college celebrated its Quasquicentennial Anniversary, on completing 125 years. In 2016, the College was reaccredited in the third cycle by the National Assessment and Accreditation Council (NAAC), Bengaluru with 'A' Grade and 3.31 CGPA. It was also awarded the 'Heritage Status Grant' by the University Grants Commission, New Delhi.

The College offers under-graduate and post-graduate courses in all three faculties, viz. Arts, Science and Commerce. These include Biotechnology, Biochemistry, Computer Science, along with traditional life sciences; Business Administration and Computer Management in Commerce; and Communicative English, English Literature, Psychology and other social sciences in Arts. It also runs 12 post-graduate programs, including M.A. in Sociology, which is a grant-in-aid course.

Besides, the curriculum also includes several add-on and short-term certificate courses. Today there are 21 departments, 12 post-graduate courses and 9 research centres recognized by Rastrasant Tukdoji Maharaj Nagpur University. The College is known for its innovative research activity. 9 Post-graduate departments are recognized by RTM Nagpur University as Centers of Research. 28 faculty members are Ph.D. supervisors. The College has implemented a mechanism of quality assurance and quality sustenance that includes a qualified and experienced faculty, demographically varied student composition, research related specialization, intensive student mentoring, a proactive training and placement process and a structured student feedback and parent-teacher association.

The College campus is spread over 8 acres. The main building encloses a quadrangle that has a proscenium a basketball court and a lush green lawn fringed by a variety of trees and flower plants. There is a 40,000 sq.m. playground, a large auditorium, gymnasium and a cafeteria. The campus also houses a girls' hostel.

The College provides a conducive environment to students to develop their personality through extra-curricular activities and in sports.

A dynamic training program and good campus placement is a feature of institutional best practices. A large number of students get regularly selected by reputed companies. A Coaching Centre for Competitive Exams helps students prepare for NET, SET, UPSC, and other competitive exams.

Hislop College has steadfastly served society and the country by producing great personalities, astute leaders, acclaimed scientists and versatile administrators to prolific litterateurs and brilliant sportsmen and women.

The Hislop Institute for Social Action and Research (HISAR) is a unique outreach program that works for the upliftment of the underprivileged classes of society. HISAR has made a significant contribution to the social upliftment of disadvantaged sections of society in the city. With its unique community extension programme, the College has adopted Bhandewadi, an impoverished area in the city habited by ragpickers where it has set up a learning centre which conducts free classes for children and sewing classes for women.

The College continues to serve the need for quality education in the region, to contribute to the glorious task of nation-building by improving the quality of life, environment and society. Its vision is to be the leading institution of higher education by integrating teaching, learning and research with community service and nation-building. Its mission is to continually strive to achieve greater heights by dedicating itself to the national goal of empowering students with knowledge, skills and values, fostering research, and serving the community at large.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Hislop College, Nagpur.

Credits:

Text	: Based on the information received from proponent
Stamp/FDC/Brochure	: Smt. Vinita Sinha
Cancellation Cachet	: Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

हिस्लॉप कॉलेज, नागपुर
HISLOP COLLEGE, NAGPUR

विवरणिका BROCHURE

हिस्लॉप कॉलेज, नागपुर

हिस्लॉप कॉलेज की कहानी तब शुरू हुई, जब एक युवा स्कॉटिश मिशनरी अपने मन में कुछ करने की चाह लिए और आंखों में स्वप्न संजोए भारत के लिए चल पड़े। मानवीय उत्साह से प्रेरित स्टीफन हिस्लॉप ने पुराने नागपुर के शुक्रवाड़ा में लड़कों का एक स्कूल शुरू किया। कॉलेज की स्थापना 1883 में हुई। अपनी साधारण शुरूआत से हिस्लॉप कॉलेज मध्य भारत में उच्च शिक्षा के एक सर्वोत्तम संस्थान के रूप में उभर कर आया, जिसमें 5000 युवा छात्र व छात्राएं शिक्षा प्राप्त करते हैं।

कॉलेज, उत्तर भारत की सिनोड चर्च के तत्वावधान में 'हिस्लॉप एजुकेशन सोसायटी' द्वारा चलाया जाता है। विदर्भ क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाला यह प्रथम संस्थान था। वर्ष 2009 में, 125 वर्ष पूरे होने पर कॉलेज ने अपनी 125वीं वर्षगांठ मनाई। वर्ष 2016 में, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक), बेंगलुरू ने तीसरे चरण में कॉलेज को 'ए' ग्रेड और 3.31 सीजीपीए के साथ पुनः प्राधिकृत किया। इसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा 'हेरिटेज स्टेटस ग्रांट' भी दिया गया।

कॉलेज अपने सभी तीनों संकायों अर्थात् कला, विज्ञान और वाणिज्य में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम करवाता है। इसमें जैव प्रोद्योगिकी, जैव रसायन, कम्प्यूटर साइंस के साथ–साथ परम्परागत जीव विज्ञान, व्यवसाय प्रशासन और वाणिज्य में कम्प्यूटर प्रबंधन, कम्युनिकेटिव इंगलिश, अंग्रेजी साहित्य, मनोविज्ञान और कला क्षेत्र में अन्य सामाजिक विज्ञानों जैसे पाठ्यक्रम भी शामिल हैं। यह समाजशास्त्र में मास्टर डिग्री, जो एक सहायता–अनुदान पाठ्यक्रम है, सहित 12 स्नातकोत्तर कार्यक्रम भी चलाता है।

इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम में कई और अल्पावधि प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी शामिल हैं। इस समय, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त 21 विभाग, 12 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और 9 अनुसंधान केन्द्र हैं। कॉलेज अपने नवाचारी अनुसंधान कार्यकलापों के लिए जाना जाता है। आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा 9 स्नातकोत्तर विभाग मान्यता प्राप्त हैं। 28 संकाय सदस्य पीएचडी पर्यवेक्षक हैं। कॉलेज ने गुणवत्ता आश्वासन और गुणवत्ता पुष्टि तंत्र को कार्यान्वित किया है, जिसमें योग्यता प्राप्त और अनुभवी शिक्षक, भिन्न–भिन्न स्थानों से आए हुए विद्यार्थी, अनुसंधान संबंधी विशिष्टता, विद्यार्थी की गहन निगरानी, प्रशिक्षण और प्लेसमेंट प्रक्रिया और संरचित विद्यार्थी फीडबैक तथा अभिभावक–संघ एसोसिएशन शामिल हैं।

कॉलेज का परिसर 8 एकड़ में फैला है। मुख्य भवन के साथ एक प्रागंण है, जिसके सामने वाले भाग में बॉस्केटबॉल कोर्ट है तथा किनारों पर विभिन्न प्रकार के वृक्षों तथा फूलों के पौधों से सज्जित हरा–भरा मैदान है। इसमें 40,000 वर्ग मीटर का खेल का मैदान,विशाल ऑडिटोरियम, जिम और एक कैफेटेरिया है। परिसर में छात्राओं के लिए एक छात्रावास भी है।

कॉलेज पाठ्येत्तर कार्यकलापों और खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करने के लिए उन्हें प्रेरक वातावरण प्रदान करता है।

सक्रिय प्रशिक्षण कार्यक्रम और बेहतर कैम्पस प्लेसमेंट इसके संस्थागत सर्वोत्तम कार्यों की एक विशेषता है। प्रतिष्ठित कम्पनियों द्वारा अनेक विद्यार्थियों का नियमित रूप से चयन किया जाता है। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग सेन्टर नेट, सेट, संघ लोक सेवा आयोग और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी करने में विद्यार्थियों की सहायता करता है।

हिस्लॉप कॉलेज ने बड़ी तेजी से महान व्यक्तित्वों, प्रख्यात नेताओं, प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, अनुभवी प्रशासकों, सृजनशील साहित्यकारों और प्रतिभावान खिलाड़ियों तथा महिलाओं के योगदान से समाज और देश की सेवा की है।

'द हिस्लॉप इंस्टीट्यूट फॉर सोशल एक्शन एंड रिसर्च (एचआईएसएआर) एक असाधारण कार्यक्रम है, जो समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करता है। इस संस्थान (एचआईएसएआर) ने शहर में समाज के वंचित वर्गों के सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अपने असाधारण सामुदायिक विस्तार कार्यक्रम से कॉलेज ने शहर के एक पिछड़े क्षेत्र भांडेवाड़ी को अंगीकार किया है, जहां कूड़ा बीनने वाले रहते हैं। कॉलेज ने इसमें एक शिक्षा केन्द्र खोला है जिसमें बच्चों के लिए निःशुल्क कक्षाएं तथा महिलाओं को सिलाई सिखाने की कक्षाएं चलाई जाती हैं।

कॉलेज लगातार जीवन की गुणवत्ता, पर्यावरण में सुधार करके, राष्ट्र–निर्माण के गौरवशाली कार्य में योगदान कर इस क्षेत्र में बेहतर शिक्षा की आवश्यकता को पूरा करने में योगदान दे रहा है। सामुदायिक सेवा तथा राष्ट्र निर्माण सहित एकीकृत शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान द्वारा उच्च शिक्षा का अग्रणी संस्थान बनने का इसका स्वप्न रहा है। विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल और मूल्यों द्वारा सशक्त बनाकर, अनुसंधान को प्रोत्साहन देकर और व्यापक स्तर पर समाज की सेवा करके राष्ट्रीय लक्ष्य के प्रति स्वयं को समर्पित करके नई ऊंचाइयों पर पहुंचने के लिए लगातार प्रयास करना इसका मिशन है।

डाक विभाग हिस्लॉप कॉलेज, नागपुर पर एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

मूलपाठ	: प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित
डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	: श्रीमती विनीता सिन्हा
विरूपण	: श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	600700
Stamps Printed	:	600700
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00